जैन **पथप्रदर्शक**

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

**नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक**

मुक्ति के मार्ग में आत्मानुभव की प्राप्ति का प्रयास ही पुरुषार्थ है।

**– बिन्दु में सिंधु, पृष्ठ–15**

वर्ष : 26, अंक : 13 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये

अक्टूबर (प्रथम) 2003 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पण्डित संजीवकुमार गोधा | वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

# राज्यपाल निर्मलचन्दजी जैन के निधन से दिगम्बर जैनसमाज शोकमग्न

**जयपुर (राज.)** : रविवार, दिनांक 22 सितम्बर 2003 को राजस्थान राज्य के महामहिम राज्यपाल श्री निर्मलचन्दजी जैन का दिल का दौरा पडने से रात्रि 2:07 बजे अकस्मात् निधन हो गया।

आपके निधन से सम्पूर्ण राजस्थान की जनता और भारतवर्ष का सम्पूर्ण जैन समाज शोक सन्तप्त है। आपने राज्यपाल जैसे महामहिम पद पर आरूढ होकर दिगम्बर जैनसमाज को गौरवान्वित किया है। आपका जीवन सदैव सादगी, सहजता और धर्मपरायणता का प्रतीक था। साथ ही आप हँसमुख, हाजिर जवाब एवं मिलनसार व्यक्तित्व के धनी थे। आप अच्छे समाजसेवी, धर्मनिष्ठ एवं जैन समाज की अनेक संस्थाओं के पदाधिकारी भी रहे।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के प्रति आपका स्नेहभाव तो प्रारंभ से ही रहा। टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के उद्घाटन समारोह के अवसर पर 1977 में आप विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे थे। राजस्थान के राज्यपाल बनने के पश्चात् तो अनेक अवसरों पर आप प्राय: टोडरमल स्मारक भवन आया ही करते थे। अभी देहावसान के 11 दिन पूर्व ही क्षमापना समारोह में मुख्यअतिथि के रूप में आप टोडरमल स्मारक पधारे थे।

इसके पूर्व दिनांक 27 जुलाई 2003 को टोडरमल स्मारक में आयोजित छब्बीसवें आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का उद्घाटन भी आप ही के कर-कमलों से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर जयपुर की 15 विभिन्न संस्थाओं एवं सम्पूर्ण भारत के विभिन्न प्रान्तों से पधारे प्रतिनिधि मुमुक्षुओं द्वारा आपका सम्मान समारोह आयोजित किया गया था।

आपने अपने चार माह के कार्यकाल में जयपुर प्रवास के दौरान जयपुर के सैंकड़ों दिगम्बर जैन मंदिरों के दर्शन किये। प्रतिदिन प्रात: अलग-अलग मंदिरों के दर्शन करने के लिये जाना उनका नित्यक्रम ही था। टोडरमल स्मारक भवन त्रिमूर्ति जैनमंदिर के दर्शन-पूजन करने तो प्राय: आते ही रहते थे।

प्रशासकीय व्यस्ततम कार्यक्रमों के होते हुये भी आपने अपने धार्मिक संस्कारों को कभी नहीं छोड़ा। दिनांक 31 अगस्त से 9 सितम्बर तक पर्यूषण पर्व के दौरान आपने अनेक बार डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचन सुने।

आपके चिर वियोग से सम्पूर्ण दिगम्बर जैनसमाज को अपूरणीय क्षति हुई है, जिसकी पूर्ति सम्भव नहीं है।

**संक्षिप्त परिचय :** 24 सितम्बर 1928 को आपका जन्म जबलपुर के प्रतिष्ठित भारिल्ल परिवार में हुआ। बचपन से ही आप प्रतिभासम्पन्न एवं अनुशासन प्रिय थे। आपने अर्थशास्त्र विषय में स्नातकोत्तर एवं विधि स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की। 1945 में आप आर.एस.एस. के कार्यकर्त्ता के रूप में अग्रणी रहे। आपने 1951 में वकालत शुरु कर म.प्र., छत्तीसगढ़ आदि के उच्च न्यायालयों में संविधान के विशेषज्ञ अधिवक्ता का कार्यभार संभाला। सुन्दरलालजी पटवा के शासनकाल में 1990 से 1992 तक मध्यप्रदेश के महाधिवक्ता रहे। 14 मई 03 को राजस्थान के राज्यपाल मनोनीत किये गये।

**देहावसान का घटनाक्रम :** दिनांक 21 सितम्बर रात्रि 10 बजे आप प्रसन्न मूड में थे। 11.40 बजे टी.वी. देखते-देखते सांस लेने में दिक्कत हुई तथा कुर्सी से गिर गये। 11.45 पर पर्सनल फिजीशियन डॉ.सुधीर भण्डारी ने ड्रिप इंजेक्शन दिया। 12.00 बजे एस.एम.एस. अस्पताल में इमरजेंसी में दाखिल किया। 12.10 तक प्राथमिक उपचार के बाद कुछ सुधार। 12.15 पर आई.सी.यू. में शिफ्ट, दिल्ली के डॉ. त्रेहान से परामर्श, बचाने के प्रयास किये; किन्तु 2.07 पर सांसे थम गई।

दिनांक 22 सितम्बर को प्रात: राजभवन में आपके शव पर श्रद्धांजलि समर्पित करने हेतु राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत, पूर्व राज्यपाल श्री अशुंमान सिंह, वसुन्धरा राजे आदि राजनेताओं, सेना, पुलिस व प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी तथा डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल, पण्डित रतनचन्द भारिल्ल, श्री नरेशकुमार सेठी, श्री महेन्द्रकुमार पाटनी, श्री राजकुमार काला आदि दिगम्बर जैनसमाज की अनेक संस्थाओं के पदाधिकारी उपस्थित थे। इस अवसर पर श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के समस्त छात्रों ने भी श्रद्धासुमन अर्पित किये।

गुलाबी राजभवन के बैंक्वेट हॉल में जनता के दर्शनार्थ रखे गये पार्थिव देह के ताबूत को जैसे ही सैन्य अधिकारियों ने उठाया तो पूरा हॉल णमोकार महामंत्र से गूँज उठा।

तदुपरान्त आपकी धर्मपत्नी, राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत, राजस्थान के वित्तमंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह, विपक्ष के नेता श्री गुलाबचन्द कटारिया, भाजपा की प्रदेशाध्यक्ष वसुन्धराराजे सिन्धिया, डॉ. हुकमचन्द

**(शेष पृष्ठ 8 पर ....)**

सम्पादकीय –

# हरिवंश कथा

37

– रतनचन्द भारिल्ल

यह राजा सिंहसेन की कथा किसी और की नहीं, अपनी ही कहानी है। राजा सिंहसेन का जीव तो हाथी की पर्याय में ही जैनधर्म की शरण प्राप्त कर वैर रहित हो गया था और उसके फलस्वरूप पाँचवें भव में 'संजयन्त' पर्याय धारणकरके संसार से मुक्त हो गया। और तू धरणेन्द्र (नागेन्द्र) होकर भी इसप्रकार तुच्छ बैरभाव को धारण कर संसार में परिभ्रमण कर रहा है।

हे धरणेन्द्र ! इसप्रकार वैर-भाव को घोर संसार का बढ़ाने वाला जानकर तू भी शत्रुता के भाव को छोड़ दे। और इन सब राग-द्वेष के मूलकारण मिथ्यात्व अर्थात् सातों तत्त्वों की भूलों एवं देव-शास्त्र-गुरु सम्बन्धी भूलों का भी त्याग कर दे। वस्तुत: जगत में कोई भी वस्तु भली-बुरी नहीं है, इष्टानिष्ट की कल्पना ही मिथ्या है और यह मिथ्यात्व ही इस जीव का सबसे बड़ा शत्रु है।

धरणेन्द्र ने पूछा ह्न हे लान्तवेन्द्र ! आपने मुझे ह्न उद्बोधन दिया ह्न इसके लिए मैं आभारी हूँ। अब कृपा करके यह बतायें कि ह्न यह मिथ्यात्व कौन है ? कहाँ रहता है? तुम मुझे उसका पता/ठिकाना बताओ और यह भी बताओ कि उसकी क्या पहचान है? उसका पता लगते ही, उसकी सही-सही पहचान होते ही मैं सबसे पहले उसका ही सर्वनाश करूँगा।

लान्तवेन्द्र ने कहा ह्न मिथ्यात्व कोई ऐसा अपराधी या विरोधी व्यक्ति नहीं है, जिसका कोई पता-ठिकाना हो, जो कहीं शहर या गाँव में रहता हो। ऐसा शत्रु नहीं है, जिसका अस्त्रों-शस्त्रों से नाश किया जा सके।

मिथ्यात्व तो अपना ही मिथ्याभाव है। सच्चे वीतरागी देव-शास्त्र-गुरु एवं जीव-अजीव आस्रव बंध आदि सात तत्त्वों के विषय में उल्टी मान्यता, विपरीत अभिप्राय होना, परद्रव्यों में एकत्व-ममत्व एवं कर्तृत्व की मान्यता का होना, मिथ्यात्व है तथा पर पदार्थों में इष्टानिष्ट बुद्धि मिथ्यात्व का फल है। ऐसे मिथ्या अभिप्राय से निरन्तर आर्त-रौद्र भाव होते हैं, जो अनन्त संसार के कारण हैं। इनका नाश तो एकमात्र इनके सम्बन्ध में सही समझ से ही होता है।

यहाँ जीवों के पुण्य-पाप के उदयानुसार अनेकभवों के भयंकर उत्थान-पतन की चर्चा द्वारा संसार की विचित्रता का कथन करके, पाठकों को ऐसे क्षणभंगुर, दुःखद दुरन्त संसार के सुखों से विरक्त कराने का संदेश दिया है।

अन्त में व्यंग्य करते हुए सहृदय कवि आचार्य कहते हैं कि देखो बैर की महिमा!

इसप्रकार आदित्याभ लान्तवेन्द्र से मिथ्यात्व का स्वरूप सुनकर, समझकर प्रबोध को प्राप्त करके धरणेन्द्र ने सब वैर-भाव छोड़कर संसार सागर से पार करानेवाला सम्यग्दर्शन प्राप्त कर लिया।

तत्पश्चात् विद्याओं के खण्डित हो जाने से जो पंख कटे पक्षियों के समान खेद-खिन्न हो रहे थे ह्न ऐसे उन विद्याधरों से धरणेन्द्र ने कहा ह्न

हे विद्याधरों ! तुम सब शीघ्र ही इस हीमन्त पर्वत पर भगवान संजयन्त स्वामी की पाँच सौ धनुष ऊँची प्रतिमा स्थापित करो। और उसी प्रतिमा के पादमूल में बैठकर उस प्रतिमा के आलम्बन से संजयन्त स्वामी की भक्तिभाव से स्तुति करते हुए आत्मा की आराधना करो। इससे तुम्हारे लौकिक मनोरथों की पूर्ति के साथ-साथ आत्मा के कल्याण का मार्ग भी प्रशस्त होगा।

धरणेन्द्र के कहे अनुसार आचरण करने से सभी विद्याधरों ने अपनी विद्यायें भी प्राप्त कर लीं और उन्हें आत्मकल्याण का मार्ग भी मिल गया।

आदित्याभ लान्तवेन्द्र और धरणेन्द्र अपनी-अपनी देवायु पूर्ण करके मथुरानगरी के धनाढ्य राजा रत्नवीर्य की प्रथम पत्नी मेघमाला से लान्तवेन्द्र का जीव मेरु नामक पुत्र हुआ एवं द्वितीय अमितप्रभा पत्नी से धरणेन्द्र का जीव मन्दर नामक पुत्र हुआ।

वे दोनों ही युवा होने पर सांसारिक सुखों को भोगते हुए उन्हें असार जानकर उनसे विरक्त होकर मुनिव्रत धारण कर मोक्षमार्ग में अग्रसर हो गये। मुनिराज मेरु ने तो मेरु की तरह अचल होकर केवलज्ञान प्राप्त कर मोक्ष प्राप्त कर लिया और मन्दर मुनि भी मन्दर की तरह स्वरूप में स्थिर होकर तीर्थंकर श्रेयांसनाथ के गणधर बन गये।

आचार्य कहते हैं ''जो जीव दुःखमय संसार सागर से पार होना चाहते हैं वे संजयन्त भगवान के इस पावन चरित्र को पढ़कर एवं उनके आदर्श जीवन का अनुसरण कर स्वयं को वैसा ही बनाये।''

**(क्रमश:)**

# कहान-संदेश

## धर्मी की मंगल भावना

**21**

व्यवहाररत्नत्रय का राग हुआ, उसे ज्ञान ने जाना, वहाँ ज्ञान ने अपनी ज्ञान पर्याय को जाना, राग पर्याय को नहीं। जाननेवाला तो स्वभाव को जानते हुए, पर को जानते हुए परिणमता है; तथापि उसे ज्ञेयकृत ज्ञान हुआ है, ऐसा नहीं है; किन्तु उसे ज्ञानकृत ज्ञान हुआ है। सम्यग्दृष्टि चक्रवर्ती को राग का ज्ञान हुआ, वह राग के कारण नहीं हुआ है; किन्तु स्व-परप्रकाशक शक्ति के कारण ज्ञान, ज्ञान को जानता है, ज्ञेय को जानता है - ऐसा कहना व्यवहार है। राग को जानते हुए जो ज्ञेयाकार रूप से ज्ञात हुआ, वह आत्मा ज्ञात हुआ है, राग ज्ञात नहीं हुआ; क्योंकि उसमें ज्ञेयकृत अशुद्धता नहीं है।

भाई ! तुझे सुख चाहिये न ! तो सुख कहाँ है? निमित्त में, राग में या एक समय की विकसित पर्याय में? उनमें दृष्टि देने से तो दुःख उत्पन्न होता है और मोक्षपर्याय में आनन्द तो है, लेकिन उसमें आनन्द भरा नहीं है, वह आनन्द की खान नहीं है। एकमात्र त्रैकालिक आत्मा अतीन्द्रिय आनन्द की खान है, इसलिए वह सर्वतत्त्व में सारभूत है।

वस्तु को ग्रहण करे, उसका नाम आत्मा उपादेय है। धारणा में यह हेय है, यह उपादेय है - ऐसा करने का नाम हेय/उपादेय नहीं है। लक्ष्य छोड़ देने का नाम हेय है और वस्तु को ग्रहण करना उसका नाम उपादेय है। आत्मा में एकाकार हो, तब आत्मा उपादेय हुआ कहा जाता है। रागादि का लक्ष्य छूट जाने का नाम हेय है।

जीव ने अपने सहज सुख के लिये एक क्षण भी शान्त होकर विचार नहीं किया है। यदि विचार करे तो वस्तु अत्यन्त सस्ती और सरल है, परन्तु तीव्र जिज्ञासा, उत्कण्ठा और तत्परता चाहिए। इस संसार का रस छूट जाये तो आत्मस्वरूप अवश्य प्रगट हो।

✻ ✻ ✻

एक द्रव्य दूसरे द्रव्य को स्पर्श नहीं करता, इस मूल सिद्धान्त से कितना और क्या सिद्ध होता है ? इसमें बारह अंग का स्पष्टीकरण हो जाता है। एक द्रव्य दूसरे द्रव्य को स्पर्श नहीं करता, इसका अर्थ यह हुआ कि उसकी पर्याय स्वयं उससे होती है और वह क्रमबद्ध होती है। एक सिद्धान्त को बराबर पकड़े तो सब पकड़ में आ जाता है। एक द्रव्य दूसरे द्रव्य को स्पर्श नहीं करता अर्थात् जो पैर धरती पर पड़ते हैं, वे धरती का स्पर्श नहीं करते, यदि पैर धरती का स्पर्श करे तो दो द्रव्य एक हो जावें। यह तो मिथ्यात्व को तोडने का शस्त्र है। आत्मा शरीर को छूता नहीं है। कर्मों से आत्मा दु:खी होता है- यह बात भी मिथ्या है। जब आत्मा कर्मों को स्पर्शता नहीं है तो उनसे दु:खी क्यों होगा ? पदार्थ भिन्न-भिन्न हैं, तो एक दूसरे का क्या करेंगे ? परन्तु इतना समझने की गरज या अवकाश किसे है ?

दवा के रजकण रोग को छूते नहीं है; पानी की ऊष्ण पर्याय उसके अपने काल में षट्कारक से स्वतंत्र हुई है। नरक के संयोगों का जीव को दु:ख नहीं है। संयोग जीव को स्पर्श नहीं करते; परन्तु अपने द्वेष के कारण दु:ख होता है। एक द्रव्य दूसरे द्रव्य को स्पर्श नहीं करता, इसलिये त्रिलोकीनाथ तीर्थंकर और उनकी वाणी भी तेरे कल्याण में कारण नहीं हो सकती - ऐसा फलित हुआ। जगत को यह बात पागलों जैसी लगती है। एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का स्पर्श नहीं करता - इस तत्त्व ने तो बारह अंग के ताले खोल दिये हैं !

भगवान आत्मा अनीन्द्रिय होने से उसकी अपेक्षा अरहंत भगवान की दिव्यवाणी और मुनियों के वृन्द सभी इन्द्रिय हैं; क्योंकि वे सभी इन्द्रियों के विषय हैं। वीतरागी देव ऐसा कहते हैं कि हम तो तेरी इन्द्रियों का विषय हैं और तू अपनी अनीन्द्रिय का विषय है; तू अपने को विषय बनाकर जान, यही हमारी स्तुति है।

अहाहा! क्या कथन है ! व्यवहार से निश्चय होता है, निमित्त से उपादान में कार्य होता है, पूर्वपर्याय कारण और उत्तरपर्याय कार्यह्न यह सब तो व्यवहार के वचन है। प्रत्येक समय की पर्याय भले ही वह केवलज्ञान हो, भले ही निगोदके जीव की अक्षर के अनन्तवें भागकी ज्ञानपर्याय हो, भले ही मिथ्यात्व हो या चाहे तो राग का कण होह्न इन सब पर्यायों का अस्तित्व जगत (छह द्रव्यों) में है, परन्तु वह अस्तित्व ऐसा है कि जिसप्रकार छह द्रव्यस्वरूप लोक है, उसीप्रकार पर्याय भी अपने से, अपने में, अपने कारण से है। जिसप्रकार द्रव्य और गुण अपने में, अपने कारण से है, उसीप्रकार पर्याय भी अपने में, अपने से अपने कारण से स्वतंत्र है।

जीव विभाव परिणाम से शून्य है, कब? तो कहते हैं किह्न तीनों काल और तीनों लोक में। अरे! जिसने अनन्तकाल में त्रसपना भी प्राप्त नही किया और भविष्यमें भी त्रसपने को प्राप्त नही होगा ऐसा निगोद का जीव भी विभाव परिणाम से शून्यस्वभावी है। पर्याय में भले ही कोई प्रकार हो; परन्तु जो शुद्ध जीव है, वह तो ऐसा ही है। तीन लोक और तीन काल में जीव विभाव परिणाम से शून्य शुद्ध जीव है। वर्तमानकाल में शुद्ध है या भविष्य में जब शुद्ध होगा तब शुद्ध हैह्न ऐसा नहीं; परन्तु तीनों काल भगवानस्वरूप शुद्ध चैतन्य आत्मा है। भले ही पंचम या षष्ठम काल हो और भले ही चाहे कसाई होकर गायों को काटता हो; परन्तु भीतर जो आत्मा है वह भगवत्स्वरूप शुद्ध है। पर्याय में चाहे जैसे परिणाम हुए; परन्तु भगवान है वह उनमें आता ही नहीं है। किस दृष्टी से?ह्न पर्यायदृष्टी से नहीं भाई ! शुद्ध निश्चयनय की दृष्टी से त्रिकाल आनन्दकन्द प्रभु शुद्ध है और वही भूतार्थ है।

## पर्यूषण समाचार

**दिनांक 31 अगस्त से 9 सितम्बर तक आयोजित इस पर्वाधिराज पर्यूषण पर देश–विदेश में 523 स्थानों पर महती धर्म प्रभावना एवं तत्त्वज्ञानवर्द्धक कार्यक्रम सम्पन्न हुये। लगभग सभी स्थानों से पर्व के समाचार प्रकाशनार्थ प्राप्त हो रहे हैं। स्थान सीमित होने से पूर्णत: समाचार प्रकाशित करना सम्भव नहीं है, फिर भी मूल बातों को ध्यान में रखते हुये संक्षिप्त समाचार प्रकाशित किये जा रहे हैं। कुछ समाचार विगत अंक में भी प्रकाशित किये जा चुके हैं।**

**बैंगलोर (कर्नाटक) :** यहाँ पण्डित उत्तमचन्दजी जैन सिवनी के तीनों समय समयसार, मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर प्रवचनों का लाभ समाज को मिला। आपके द्वारा ही दोपहर में शंका समाधान का कार्यक्रम रखा गया। रात्रि में श्री विवेक जैन एवं श्री अंकित जैन ने सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये। आपका एक प्रवचन जैन विद्यालय में भी हुआ। प्रात: गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों का लाभ भी समाज को मिला।

अन्तिम दिन समवशरण मंदिर में प्रतिमायें विराजमान की गई। इस अवसर पर लगभग 45 हजार रुपये का सत्साहित्य घर–घर पहुँचा।

**टीकमगढ़ (म.प्र.) :** यहाँ बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद के प्रात: समयसार एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर मार्मिक प्रवचन हुये। दोपहर में पण्डित सुनीलकुमारजी बेलोकर द्वारा बारसाणुपेक्खा पर कक्षा ली गई। प्रात: पंचपरमेष्ठी विधान एवं रत्नत्रय मण्डल विधान का आयोजन ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन में पं. सुनीलजी बेलोकर द्वारा कराया गया।

इस अवसर पर आगामी पंचकल्याणक को ध्यान में रखते हुये अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। दिनांक 10 सितम्बर को 'शिखर–शिलान्यास' समारोह सम्पन्न हुआ।

**पंढरपुर (महा.) :** यहाँ नवनिर्मित मंदिर में पर्यूषण पर्व हर्षोल्लास से मनाया गया। इस प्रसंग पर ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर, गजपंथा के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक, दोपहर में छहढाला एवं रात्रि में दशधर्मों पर सारगर्भित प्रवचन हुये। पण्डित प्रशांतजी शास्त्री, मौ द्वारा क्रमबद्धपर्याय पर कक्षा, प्रात: गणधरवलय विधान का आयोजन तथा रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

**कोलकाता (पं.बं.) :** यहाँ पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन, आगरा के प्रात: समयसार (संवर अधिकार) पर, रात्रि में धर्मोपदेश तथा रत्नकरंड श्रावकाचार पर मार्मिक व्याख्यान हुए।

**कोलकाता (पं.बं.) :** यहाँ श्री दिग.जैन मंदिर पद्दोपुकूर में पण्डित हेमचंदजी हेम, देवलाली के प्रात: प्रवचनसार पर एवं रात्रि में धर्म के दशलक्षण पर सारगर्भित प्रवचन हुए।

**मुम्बई (बोरीवली) :** यहाँ पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन के प्रात: समयसार पर एवं रात्रि में दशलक्षण धर्मो पर मार्मिक प्रवचन हुये। दोपहर में तत्त्वचर्चा का कार्यक्रम रखा गया। प्रात: आपके प्रवचनों के पूर्व पूजन–विधान के बाद पूज्य गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

**जबलपुर (म.प्र.) :** यहाँ पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील के प्रात: नियमसार के शुद्धभाव अधिकार पर, दोपहर में मोक्षमार्गप्रकाशक के सम्यक्त्व सन्मुख मिथ्यादृष्टि विषय पर एवं रात्रि में दशलक्षण धर्मो पर मार्मिक प्रवचन हुये। अन्तिम दिन आपका एक प्रवचन दिगम्बर जैन मन्दिर रांझी में भी हुआ। तथा पं. अनिलजी आलमान ने बालकक्षा ली एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये।

**अहमदाबाद (गुज.) :** यहाँ आशीष नगर में पं.टोडरमल स्मारक ट्रस्ट से बेनश्री राजकुमारजी, जयपुर पधारीं। आपके द्वारा प्रात: समयसार के संवर अधिकार पर तथा रात्रि में दशलक्षण धर्मों पर सारगर्भित प्रवचन हुये। दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र के आधार पर विग्रहगति एवं कालचक्र पर कक्षा तथा सायंकाल बालकक्षा ली गई।

**दिल्ली :** यहाँ देश की राजधानी में ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना, ब्र. संध्याबेन शिकोहाबाद, डॉ. वीरसागरजी दिल्ली, डॉ. राजेन्द्रजी बंसल अमलाई आदि 50 विद्वानों द्वारा प्रवचनों एवं कक्षाओं के माध्यम से अभूतपूर्व धर्म प्रभावना हुई। सामूहिक क्षमावाणी एवं विद्वत् सम्मान समारोह आत्मार्थी ट्रस्ट के तत्त्वावधान में आत्मसाधना केन्द्र, दिल्ली में सम्पन्न हुआ।

**सागर (मकरोनिया) :** यहाँ पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड के प्रात: तत्त्वार्थसूत्र, रात्रि में दशधर्म तथा समयसार पर मार्मिक प्रवचन हुये। दोपहर में पण्डित पवन जैन द्वारा गणधरवलय विधान का आयोजन किया गया।

**नागपुर (महा.) :** यहाँ पण्डित अरहंतप्रकाशजी झांझरी, उज्जैन के प्रात: समयसार कलश पर एवं रात्रि में रत्नकरण्डश्रावकाचार के आधार से दशलक्षण धर्मों पर सारगर्भित प्रवचन हुये। दोपहर में पण्डित प्रयंकजी शास्त्री, रहली द्वारा तीनलोक मण्डल विधान कराया गया। रात्रि में प्रवचनोपरान्त सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। कार्यक्रमों में श्रीमती अभिधारा झांझरी, डॉ. शकुन जैन, कु. स्वाती जैन एवं पण्डित स्वप्निल शास्त्री का विशेष योगदान रहा।

**इटावा (राज.) :** यहाँ पण्डित सुनीलकुमारजी नाके के प्रात: मोक्षमार्ग प्रकाशक, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये। सायंकाल बालकक्षा एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

**अमायन (म.प्र.) :** यहाँ डॉ. दीपकजी शास्त्री, जयपुर के प्रात: समयसार कलश, रात्रि में धर्म के दशलक्षण पर सारगर्भित प्रवचन हुये। दोपहर में तत्त्वचर्चा तथा तेरह द्वीप विधान का आयोजन किया गया।

**इन्दौर** के विभिन्न उपनगरों स्थित श्री दिगम्बर जैन मंदिरों में ह्न **साधनानगर** में पण्डित देवेन्द्रकुमारजी जैन बिजौलिया, **रामचन्द्रनगर** में पण्डित चन्दूभाईजी मेहता, फतेपुर **तिलकनगर** में पण्डित कपूरचन्दजी कौशल भोपाल, **शक्कर बाजार** में पण्डित कोमलचन्दजी टडा, **रामाशाह मन्दिर** में पण्डित वीरचन्दजी जैन, **नन्दानगर** में पण्डित दीपकजी जैन, **गाँधीनगर** में पण्डित ऋषभकुमारजी शास्त्री, अहमदाबाद **न्यू पलासिया** में पण्डित रीतेशजी शास्त्री सनावद तथा **माणक चौक** में पण्डित गौरवजी शास्त्री चन्देरी के दशलक्षण धर्मों के अतिरिक्त अन्य अनेक विषयों पर प्रवचन हुये। लगभग सभी स्थानों पर दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा ली गई।

**मैनपुरी (उ.प्र.) :** यहाँ विदुषी सुधाबेन, छिन्दवाड़ा द्वारा दशलक्षण धर्म पर प्रवचन तथा पण्डित आकेशजी द्वारा प्रात: समयसार, दोपहर में चार अभाव तथा रात्रि में पौराणिक कहानियों के माध्यम से धर्मप्रभावना हुई। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

**सागर (म.प्र.) :** यहाँ श्री तारणतरण दिगं. जैनमंदिर में पण्डित पदमचन्दजी सर्राफ द्वारा प्रात: एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन तथा दोपहर में शंका–समाधान का कार्यक्रम रखा गया।

**बड़ा मलहरा :** यहाँ पण्डित मुरारीलालजी नरवर द्वारा प्रात: पूजन एवं मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ पर प्रवचन हुये। दोपहर में छहढाला तथा रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। रात्रि में पण्डित ऋषभजी द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

**भितरवार (म.प्र.) :** यहाँ पण्डित ब्र. रमेशजी जैन भोपाल के तीनों

समय मोक्षमार्गप्रकाशक, रत्नकरण्ड श्रावकाचार एवं दशलक्षण धर्मों पर प्रवचन हुये। इस अवसर पर वीतराग-विज्ञान पाठशाला का उद्‌घाटन तथा युवा फैडरेशन की स्थापना की गई।

**रतलाम (म.प्र.) :** यहाँ पण्डित पदमचन्दजी अजमेरा के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक, दोपहर में छहढाला एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये।

**बडवानी (म.प्र.) :** यहाँ विदुषी पुष्पाबेन खण्डवा द्वारा तीनों समय धर्म प्रभावना हुई। जिससे सम्पूर्ण समाज लाभान्वित हुआ।

**फालेगाँव (महा.) :** यहाँ पण्डित दिलीपजी महाजन के प्रात: छहढाला एवं रात्रि में दशधर्म पर प्रवचन हुये। सायंकाल बालकक्षा एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम भी सम्पन्न हुये।

**गढाकोटा :** यहाँ पण्डित बाबूलालजी पल्लीवाल, गुना के प्रात: समयसार, दोपहर में प्रवचनरत्नाकर के माध्यम से शंका समाधान एवं रात्रि में मोक्षमार्ग प्रकाशक तथा दशधर्म पर प्रवचन हुये।

**रानीपुर (उ.प्र.) :** यहाँ पण्डित सुदर्शनजी, बीना के प्रात: दशधर्म, दोपहर में प्रवचनसार एवं रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचन हुये।

**शाहपुर (म.प्र.) :** यहाँ पण्डित बाबूलालजी बांझल, गुना के प्रात: समयसार, दोपहर में छहढाला तथा रात्रि में मोक्षमार्गप्रकाशक एवं दशधर्मों पर प्रवचन सम्पन्न हुये।

**बागपत (उ.प्र.) :** यहाँ पण्डित गोकुलचन्दजी सरोज, ललितपुर के प्रात: रत्नकरण्डश्रावकाचार एवं रात्रि में दशधर्म पर प्रवचन हुये। पण्डित शीतलजी आलमान शास्त्री द्वारा प्रात: 64 ऋद्धि विधान, दोपहर में छहढाला पर कक्षा, सायंकाल बालकक्षा एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

**शेरकोट (उ.प्र.):** यहाँ पण्डित प्रदीपकुमारजी शास्त्री, धामपुर के तीनों समय विभिन्न विषयों पर प्रवचन हुए। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

**फरीदाबाद (उ. प्र.):**यहाँ पण्डित संजयजी जैन(इन्जी.), खनियाधांना के द्वारा प्रात: मोक्षमार्ग प्रकाशक रात्रि में दशलक्षणधर्म पर प्रवचन तथा दोपहर में करणानुयोग विषयपर विशेष कक्षा ली गयी।

**हिंगोली(महा.) :** यहाँ पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री, बण्डा के प्रात: प्रवचनसार एवं तत्त्वार्थसूत्र पर प्रवचन, दोपहर में पुरूषार्थसिद्धुपाय की कक्षा तथा रात्रि में बालकक्षा एवं दशधर्मो पर प्रवचन हुए। प्रवचनोपरान्त सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर युवावर्ग के साथ-साथ समाज के लगभग 450 मुमुक्षुओं ने धर्मलाभ लिया।

**बून्दी (राज.):** यहाँ पण्डित डूंगरमलजी जैन, सेमारी के प्रात: मोक्षमार्ग प्रकाशक एवं रात्रि में दशलक्षणधर्म पर प्रवचनों का समाज को लाभ हुआ।

**भोपाल (कोहेफिजा):** यहाँ पण्डित कस्तुरचंदजी जैन, विदिशा द्वारा प्रात: नियमसार एवं पंच परावर्तन तथा दोपहर में छहढाला की कक्षा ली गयी। रात्रि में पण्डित योगेशकुमारजी शास्त्री द्वारा दशलक्षणधर्म पर प्रवचन हुए।

**कोल्हापुर (महा.):** यहाँ पण्डित जिनचंदजी आलमान द्वारा प्रात: तत्त्वार्थसूत्र ग्रंथपर प्रवचन हुए। दोपहर में श्री जडेसर द्वारा गोम्मटसार एवं शान्तिनाथजी पाटील द्वारा रत्नकरंड-श्रावकाचार तथा रात्रि में दशलक्षणधर्म पर प्रवचन हुए।

**बेगमगंज (म. प्र.):** यहाँ पण्डित विमलकुमारजी जैन, जलेसर द्वारा प्रात: तत्त्वार्थसूत्र, दोपहर मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये। प्रश्नमंच एवं विभिन्न कार्यक्रम भी आयोजित किये गये।

**खेकड़ा (उ.प्र.) :** यहाँ पण्डित कस्तूरचंदजी बजाज, भोपाल के प्रात: तत्त्वार्थसूत्र, दोपहर में समयसार तथा रात्रि में जिनेन्द्र भक्ति के पश्चात् दशधर्मों पर व्याख्यान हुए। प्रात: कल्पद्रुम मंडल विधान तथा रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम पण्डित अभिनवजी शास्त्री, जबलपुर के सहयोग से कराये गये।

**खतौली (उ.प्र.) :** यहाँ पण्डित मिश्रीलालजी जैन एवं श्रीमती कुसुमलताजी जैन, खनियाधांना के प्रात: समयसार, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुए, जिसका समाज को लाभ प्राप्त हुआ।

**एत्मादपुर (उ.प्र.) :** यहाँ पण्डित भागचंदजी जैन, पथरिया के तीनों समय विभिन्न विषयों पर प्रवचन हुए।

**रूड़की (उ.प्र.) :** यहाँ पण्डित लालारामजी साहु, अशोकनगर के प्रात: समयसार, दोपहर में मोक्षमार्गप्रकाशक, रात्रि में दशधर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुए।

**देवलगाँवराजा (महा.) :** यहाँ पण्डित जीवराजजी जैन, नासिक के तीनों समय विभिन्न विषयोंपर प्रवचन एवं रात्रि में कार्यक्रम कराये गये।

**लाखेरी (राज.) :** यहाँ पण्डित विमलकुमारजी जैन द्वारा प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक, रात्रि में दशलक्षण धर्म तथा दोपहर में शंका समाधान का कार्यक्रम रखा गया।

**मौ (म.प्र.) :** यहाँ पण्डित गुलाबचंदजी जैन, भोपाल के प्रात: तत्त्वार्थसूत्र तथा समयसार पर प्रवचन एवं रात्रि में रत्नकरण्डश्रावकाचार के आधार से दशधर्मों पर मार्मिक व्याख्यान हुए।

**अकाझिरी (म. प्र.) :** यहाँ पण्डित सरदारमलजी जैन, बेरसिया के प्रात: तत्त्वार्थसूत्र एवं दशधर्मों पर प्रवचन, दोपहर में छहढाला एवं रात्रि में णमोकार महामंत्र पर प्रवचन हुए।

**शाहगढ (म.प्र.) :** यहाँ पण्डित अजीतकुमारजी जैन, फिरोजाबाद के प्रात: केवलज्ञान विषय पर तथा रात्रि में दशलक्षणधर्मों पर मार्मिक प्रवचन हुए। दोपहर में छहढाला विषय पर प्रौढकक्षा ली गई।

**करेली (म.प्र.) :** यहाँ पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलाम के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक, दोपहर छहढाला तथा रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुए।

**बनखेड़ी (म.प्र.) :** यहाँ पण्डित नितिनकुमारजी शास्त्री, इन्दौर के तीनों समय प्रवचन एवं बाल कक्षा के माध्यम से समाज को धर्मलाभ मिला।

**रायपुर (म.प्र.) :** यहाँ श्री शंकरनगर दिग. जैन मंदिर में पण्डित अशोकजी शास्त्री द्वारा दशधर्मों पर मार्मिक व्याख्यान हुए। तथा श्री चन्द्रप्रभ दि. जैन मंदिर में श्री अशोकजी जैन, घुवारा द्वारा दशधमा पर प्रवचन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए।

**शिरडशहापुर (महा.) :** यहाँ पण्डित प्रशांतकुमारजी काले शास्त्री के प्रात: योगसार एवं रात्रि में ज्ञानार्णव पर प्रवचन हुए। पं. रमेशचंदजी महाजन द्वारा तत्त्वचर्चा तथा प्रेमचंदजी महाजन द्वारा प्रौढकक्षा चलाई गई।

**पुलल (तमिलनाडू) :** यहाँ पण्डित जे. अशोकजी शास्त्री द्वारा सरल-सुबोध भाषा में दशधर्मोपर प्रवचन हुए, जिसका लाभ स्थानीय जैनसमाज को प्राप्त हुआ।

**महावीरजी (राज.) :** यहाँ पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री, खनियांधाना के दोपहर एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये।

**विहिगाँव(महा.) :** यहाँ पण्डित संजयकुमारजी महाजन द्वारा प्रात: मोक्षमार्ग प्रकाशक, दोपहर में छहढाला एवं रात्रि में दशधर्मोपर प्रवचनों का लाभ समाज को प्राप्त हुआ। सांस्कृतिक कार्यक्रम भी सम्पन्न हुए।

**(शेष पृष्ठ 8 पर ....)**

तत्त्वचर्चा

# समयसार का सार 76

गतांक से आगे

– डॉ॰ हुकमचन्द भारिल्ल

कोई कहे कि मैंने तो गल्तियाँ बहुत की हैं, मुझे मोक्ष कैसे होगा? उससे कहते हैं कि यह बात तू अपने दिमाग से निकाल दे; क्योंकि तूने मात्रा एक ही गलती की है आज तक।

नहीं, भाई! मैंने बहुत जीवों को सताया, बहुत जीवों की हिंसा की, इन्कमटैक्स, सैलटेक्स की चोरी की। आपको पता नहीं; मैंने बहुत पाप किए हैं साहब।

आलोचना पाठ में भी कहते हैं न –

हिंसा पुनि झूठ जु चोरी, पर वनिता सों दृग जोरी।
आरंभ परिग्रह भीने, पन पाप जु या विधि कीने।।

इसके लिए तो आचार्य कहते हैं कि यह आलोचना–प्रतिक्रमण तो विषकुंभ है। तुमने यह सब कुछ किया ही नहीं है। तुम तो धोखे में हो कि तुमने कुछ किया है।

टी.वी. में सीरियल आते हैं तो एक सीरियल में ऐसा आया कि एक आदमी किसी के यहाँ जाकर उसके साथ बन्दूक से छीना झपटी कर रहा था, कि ऐसे में बंदूक की गोली चल गई, लेकिन सामनेवाला आदमी उसकी गोली से नहीं मरा। उसकी गोली तो ऊपर से चली गई थी। लेकिन पीछे से किसी बदमाश ने गोली चलाई थी, उससे सामनेवाला मरा। लेकिन वह आदमी समझता है कि यह मेरी गोली से ही मरा है। वह बदमाश, जिसने गोली से मारा है, वह भी समझता है कि उस आदमी को स्वयं के द्वारा मारने का भ्रम हो गया।

वह बदमाश उस आदमी को कहता है कि भाग जा, भाग जा, छिप जा, नहीं तो पकड़ा जायेगा। इसप्रकार उसे भगाकर अपराधी बनाकर उस पर गोली मारने का इल्जाम लगा देता है।

भविष्य में जब अनेक कारणों से सिद्ध हो जाता है कि तेरी बंदूक में से जो गोली निकली थी, वह गोली, तो वहाँ पेड़ में चिपकी है। जो गोली उसे लगी है, वह तो किसी दूसरे के बंदूक की गोली है।

जिसप्रकार वह आदमी इस अपराधबोध से ग्रस्त हो गया था कि मेरे द्वारा गोली लगी है। उसीप्रकार यह जीव भी मैंने झूठ बोला, चोरी की इत्यादि के अपराधबोध से ग्रस्त है।

वह कहता है कि मैंने झूठ बोलने का अपराध किया तो कहते हैं कि तू झूठ बोल ही नहीं सकता है; क्योंकि भाषा तो पुद्गल की पर्याय है और तू चेतनद्रव्य है। इन दो द्रव्यों के बीच में वज्र की दीवाल खड़ी है। जब तू बोल ही नहीं सकता है तो झूठ या सच बोलने की बात कहाँ से आई ?

तुमने चोरी भी नहीं की, क्योंकि परद्रव्यों के ग्रहण से भगवान आत्मा शून्य है। आत्मा में एक त्यागोपादानशून्यत्व नाम की शक्ति है। उसके कारण जब तू परद्रव्य को ग्रहण ही नहीं कर सकता है, तो चोरी कैसे कर सकता है ?

तू कहता है कि मैंने जीवों को मारा, जब तू मार ही नहीं सकता है तो फिर मारेगा कैसे ? तुझे तो मारने का भ्रम हो गया है।

तू कहता है कि मैंने इतना परिग्रह जोड़नेरूप पाप किया है, तो कहते हैं कि परिग्रह तुम्हारे जोड़ने से कहाँ जुड़ता है? वह तो पूर्व पुण्य के उदय से आता है। जब पाप का उदय आता है तो सड़क पर आ जाते हो और पाँच रुपये भी जेब में नहीं रहते। जिस पुण्य के उदय से सामग्री मिलती है, वह समाप्त होते ही सामग्री चली जानेवाली है।

तुम तो इस अपराधबोध से ग्रस्त हो गए हो कि मैंने इतना परिग्रह जोड़ा। वास्तव में न तो तुमने कुछ जोड़ा है और न ही कुछ छोड़ा है।

मोक्ष अधिकार में तो एक ऐसी गाथा आई है कि जिसमें कहा है कि मोक्ष और बंध तो जाने जाते हैं, होते नहीं हैं।

सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार की 320 दिट्ठी जहेव णाणं नामक गाथा में कहा है कि कुछ भी अपराध तेरे से नहीं हुआ है।

तुम कहते हो कि मैंने इतने पाप किए कि अनंत भव में नहीं कटेंगे और हमारे एक गुरुजी कहते थे कि एक अन्तर्मुहूर्त में सब भस्म हो जायेंगे।

तुम जो ये मानते हो कि मैंने बहुत पाप किए हैं, वह भी गलत है और गुरुजी जो ये कहते थे कि भस्म हो जायेंगे, यह भी गलत है।

ये सब तुम्हारे पास है ही नहीं, तो क्या भस्म होंगे ?

मैंने अपराध किए – इस मान्यता के कारण तूने इतने दुःख भोगें हैं।

उस आदमी को यह भ्रम हो गया था कि मेरी गोली से मरा है; इसलिए जंगल–जंगल में डरकर भागता रहा। 10–20 साल तक वह इसी भ्रम के कारण भटकता रहा।

उसीप्रकार तुम्हारे द्वारा भी एकमात्रा यह भूल हुई कि तुमने पर से भिन्न अपने को नहीं जाना। तुम तो अपने को भूल के आप हैरान हो गये हो।

कोई कहे कि मैंने इतनी सी गलती की और इतना बड़ा दंड ? क्या यह ककड़ी के चोर को कटार मारने जैसी सजा नहीं हुई ? तो कहते हैं कि तू अपनी इस झूठी मान्यता के कारण अनंत पर–पदार्थों का मालिक बना और उन पदार्थों पर अधिकार जमाया। इतनी–सी ही बात है कि तुमने उस पर सब कुछ करने का प्रयत्न किया और उसमें तेरे प्रयत्न निष्फल हो गए, यही अनंत दुःख है।

कदाचित् किसी पुण्य के उदय के योग से कुछ अनुकूल हो गया, तो मैं चौड़ा और बाजार संकरा जैसी स्थिति हो जाती है कि मैंने यह किया, मैंने वह किया।

इसप्रकार तुमने उस झूठी मान्यता को करनेरूप अपराध किया। अपराध का अर्थ भी यही होता है कि अपगतः राधः इति अपराधः। राध का अर्थ आत्मा होता है। उसको तुमने नहीं जाना, निज नहीं माना – बस इसी का नाम अपराध है।

उस अपराध को सुधारने का उपाय मात्रा यही है कि तू पर से भिन्न भगवान आत्मा को जान। उस भगवान को प्रज्ञाछैनी से ही जानो, प्रज्ञाछैनी से पकड़े रखो, उसी प्रज्ञाछैनी से उसी में जम जाओ, उसी में रम जाओ। रमने व जमने का उपाय भी उस आतमा को ही जानते रहना है और कोई दूसरा काम नहीं करना है।

बस एक ही काम है और वह तेरी प्रज्ञाछैनी पर्यायरूप है। यदि इसको आत्मा से अलग कर दे, तो वह फिर पराधीन हो जाती है। इसलिए यहाँ प्रज्ञाछैनी को वर्णादि और रागादि में शामिल नहीं किया।

सभी मुमुक्षुओं ने केवलज्ञान से भिन्न, केवलज्ञान से भिन्न – ऐसा तो बहुत सुना होगा; लेकिन रागादि के समान इस प्रज्ञाछैनी को भिन्न नहीं करना है। यह बहुत अद्भुत बात है।

सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार में तो यहीं से प्रारम्भ करते हैं कि प्रज्ञा– छैनी के साथ तेरा तादात्म्य संबंध है।

सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार की पहली गाथा में कहते हैं –

दवियं जं उप्पज्जइ गुणेहिं तं तेहिं जाणसु अणण्णं।
जह कडयादीहिं दु पज्जएहिं कणयं अणण्णमिह।।308।।
जीवस्साजीवस्स दु जे परिणामा दु देसिदा सुत्ते।
तं जीवमजीवं वा तेहिमणण्णं वियाणाहि।।309।।

इन्हीं गाथाओं का हिन्दी पद्यानुवाद इसप्रकार है –

( हरिगीत )

है जगत में कटकादि गहनों से सुवर्ण अनन्य ज्यों।
जिन गुणों में जो द्रव्य उपजे उनसे ज्ञान अनन्य त्यों।।308।।
जीव और अजीव के परिणाम जो जिनवर कहे।
वे जीव और अजीव जानों अनन्य उन परिणाम से।।309।।

जिसप्रकार जगत में कड़ा आदि पर्यायों से सोना अनन्य है; उसीप्रकार जो द्रव्य जिन गुणों से उत्पन्न होता है, उसे उन गुणों से अनन्य जानो।

जीव और अजीव के जो परिणाम सूत्रा में बताये गये हैं; उन परिणामों से जीव या अजीव को अनन्य जानो।

कुन्दकुन्द शतक में समागत इसी भाव को स्पष्ट करनेवाली गाथाएँ इसप्रकार हैं –

( हरिगीत )

उत्पाद–व्यय–ध्रुव–युक्त सत् सत् द्रव्य का लक्षण कहा।
पर्याय गुणमय द्रव्य है – यह वचन जिनवर ने कहा।।55।।
पर्याय बिन ना द्रव्य हो ना द्रव्य बिन पर्याय ही।
दोनों अनन्य रहें सदा – यह बात श्रमणों ने कही।।56।।

इसप्रकार इस सर्वश्रेष्ठ अधिकार सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार में यहाँ से बात शुरू करते हैं कि जो द्रव्य है, वह अपनी पर्यायों में उत्पन्न होता है और उस द्रव्य को तुम अपनी पर्यायों से अनन्य जानो।

ये वही गाथाएँ हैं, जिनमें से गुरुदेवश्री ने क्रमबद्धपर्याय निकाली है।

इन्हीं गाथाओं की वह टीका है; जिसकी पहली पंक्ति इसप्रकार है–

जीवो हि तावत्क्रमनियमितात्मपरिणामैरुत्पद्यमानो जीव एव, नाजीवः, एवमजीवोऽपि क्रमनियमितात्मपरिणामैरुत्पद्य– मानोऽजीव एव न जीवः।

प्रथम तो जीव अपने क्रमनियमित परिणामों से उत्पन्न होता हुआ जीव ही है, अजीव नहीं। इसीप्रकार अजीव भी अपने क्रमनियमित परिणामों से उत्पन्न होता हुआ अजीव ही है, जीव नहीं। यह भेदविज्ञान की पराकाष्ठा है।

टीका की इन पंक्तियों के बाद की जो विषयवस्तु है, वह सर्वविशुद्ध– ज्ञानाधिकार में इस पंक्ति तक चली गई है कि प्रत्येक द्रव्य अपनी पर्यायों का कर्ता है, अन्य का कर्ता नहीं; इसप्रकार यह आत्मा अकर्ता सिद्ध हुआ।

यह आत्मा अपनी पर्यायों का कर्ता है। यदि आत्मा अपनी पर्यायों का कर्ता नहीं होगा तो फिर अपनी पर्यायों का कर्ता किसी दूसरे को मानना होगा, तो फिर महासंकट खड़ा हो जायेगा; क्योंकि एक द्रव्य का कर्ता दूसरा द्रव्य खड़ा हो जायेगा। जबकि कर्ता–कर्म अधिकार में डंके की चोट यह बात कहकर आए हैं कि एक द्रव्य दूसरे द्रव्य के आधीन है ही नहीं।

बहुत से लोग कहते हैं कि इन गाथाओं से आप क्रमबद्धपर्याय निकालते हैं। वे कहते हैं कि इसमें तो यह लिखा है कि जीव जीव ही है, अजीव नहीं। इसमें तो अजीव से भेदविज्ञान कराया है। इसमें ऐसी बात कहाँ है कि पर्यायें क्रमबद्ध होती हैं।

कोई प्रश्न करें कि जीव बदलता है कि नहीं बदलता ?

अरे भाई बदलता तो है; पर बदलकर अजीव नहीं हो जाता; इसलिए कहते हैं कि कभी नहीं बदलता। अनादि से अनंतकाल तक कितना भी कर्मों के बीच में रहे, कितने भी पाप करे, निगोद में रहें या नरक में रहना पड़े; तब भी वह कभी भी जीव से अजीव नहीं होगा।

और एकसमय भी ऐसा नहीं होता कि वह बदले नहीं। वह प्रतिसमय बदलकर भी नहीं बदलता है। जीव का स्वभाव तो जीवन है, चेतन है; वह बदलकर के कभी अजीव नहीं होता।

जब हम बदलने की बात कहते हैं तो उसका अर्थ पर्यायों में परिवर्तन से है और जब नहीं बदलने की बात कहते हैं तो उसका अर्थ है कि हम द्रव्यस्वभाव की बात कर रहे हैं।

कोई कहे कि बदलता है तो किसी दूसरे के कारण ही बदलता होगा ? तो कहा कि नहीं, यहाँ दो द्रव्यों के बीच में वज्र की दीवाल खड़ी करनी है; इसलिए कहा कि किसी दूसरे के कारण नहीं बदलता है। वह स्वयं पर्यायरूप में क्रम से बदलता है। अनादिकाल से अनंतकाल तक प्रत्येक जीव के बदलने का एक सुनिश्चित क्रम है, उसी नियमित क्रम से वह बदलता है, इसप्रकार इस पंक्ति में क्रमबद्धपर्याय आई है। **(क्रमशः)**

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

(पृष्ठ 5 का शेष ...)

**अजमेर (राज.) :** यहाँ पण्डित विपिनकुमारजी शास्त्री के प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक तथा रात्रि में दशधर्मों पर सरलभाषा में प्रवचन हुये। इस प्रसंग पर दशलक्षण विधान का आयोजन श्री हीराचन्दजी बोहरा द्वारा किया गया।

**रामटेक(महा.) :** यहाँ पण्डित संतोषजी सावजी, अंबड के द्वारा प्रात: तारणस्वामी द्वारा रचित श्री मालारोहण एवं कमलबत्तीसी ग्रन्थपर, दोपहर में समयसार तथा रात्रि में दशधर्मों पर व्याख्यान हुए। इसी अवसर पर वीतराग-विज्ञान पाठशाला की स्थापना भी की गई।

**पूणे (महा.) :** यहाँ पण्डित जितेन्द्रकुमारजी राठी, पारशिवनी के प्रात: षट्आवश्यक, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र तथा रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रवचन हुये। सायंकाल बाल कक्षा एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गये। इस अवसर पर श्री अरहंत दि. जैन ट्रस्ट की स्थापना की गई, जिसके कार्यकर्ताओं द्वारा शीघ्र ही वहाँ एक नूतन जिनमंदिर का निर्माण कार्य सम्पन्न होगा।

**एर्नाकुलम (केरल) :** यहाँ पं. गजेंद्रकुमारजी शास्त्री बड़ामलहरा, पं. हितेशजी शास्त्री चिचोली, पं. विवेकजी सातपुते डोणगांव, पं. अतुलजी शास्त्री बंडा, पं. संजीवजी शास्त्री, पं. राजेंद्रजी शास्त्री एवं पं. चिन्मयजी शास्त्री द्वारा प्रात: दशधर्मों पर, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र तथा रात्रि में कार्तिकेयानुप्रेक्षा पर सारगर्भित प्रवचन हुए। दोपहर में ही बालकक्षा ली गई। यहाँ आठों विद्वानों के सान्निध्य में अत्यन्त उत्साहपूर्वक पर्यूषण पर्व सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर केरल समाज द्वारा शीघ्र ही एक नूतन जिनमंदिर बनाने का प्रस्ताव लिया गया।

**पेटरवार(झारखण्ड) :** यहाँ पण्डित प्रशांतकुमारजी मोहरे, सोलापुर के प्रात: पंचपरमेष्ठी के स्वरूप पर प्रवचन, दोपहर में भक्तामरस्तोत्र तथा बालकक्षा एवं रात्रि में दशधर्मों पर व्याख्यान हुए।

**अहमदाबाद(गुज.) :** यहाँ पण्डित प्रवेशकुमारजी भारिल्ल द्वारा प्रात: रत्नकरण्डश्रावकाचार पर प्रवचन, दोपहर में भक्तामरस्तोत्र की प्रौढकक्षा, रात्रि में भक्तिसंध्या तथा दशधर्मों पर प्रवचन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुए। इस अवसर पर पण्डित प्रवेशजी द्वारा अ.भा.जैन युवा फैडरेशन का पुनर्गठन एवं महिला फैडरेशन की स्थापना की गई। पण्डित उदयमणीजी शास्त्री, भिण्ड के सान्निध्य में दो साप्ताहिक पाठशालाओं का उद्घाटन हुआ।

यही मणिनगर में पण्डित मनोजकुमारजी शाह, डडूका द्वारा प्रात: मोक्षमार्गप्रकाशक के निश्चयाभासी प्रकरण, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये। अन्तिम दिन विधान का आयोजन किया गया।

**सावदा (महा.) :** यहाँ पण्डित विजयकुमारजी राऊत के प्रात: जैन सिद्धान्त प्रवेशिका, दोपहर में मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में दशधर्म पर प्रवचन हुये। साथ ही शंका-समाधान का कार्यक्रम भी रखा गया।

**डूंगरपुर (राज.) :** यहाँ पण्डित मोहितजी शास्त्री, अरथुना के तीनों समय विभिन्न विषयों पर प्रवचनों के माध्यम से समाज को धर्मलाभ मिला।

**वसमतनगर (महा.) :** यहाँ पण्डित राजकुमारजी काले द्वारा प्रात: छहढाला दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र एवं तत्त्वचर्चा एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन सम्पन्न हुये। सायंकाल बालकक्षा भी ली गई।

**वर्धा (महा.) :** यहाँ पण्डित विपिनकुमारजी, फिरोजाबाद के प्रात: रत्नकरण्ड श्रावकाचार, दोपहर में मोक्षमार्गप्रकाशक एवं रात्रि में दशधर्मों पर प्रवचन हुये। सायंकाल बालकक्षा भी ली गई।

(पृष्ठ 1 का शेष ...)

भारिल्ल एवं श्रीमती गुणमाला भारिल्ल के साथ आपके पार्थिवदेह को वायुयान में जयपुर से जबलपुर (म.प्र.) ले जाया गया।

जबलपुर में श्री जैन की अन्त्येष्टी क्रिया के प्रसंग पर उक्त सभी के अतिरिक्त मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री दिग्विजय सिंह, प्रदेश के वनमंत्री हरवंश सिंह तथा जबलपुर के प्रभारी मंत्री श्री सत्येन्द्र पाठक भी उपस्थित थे।

**शोक सभा :** दिनांक 23 सितम्बर को सकल जैनसमाज जयपुर की ओर से भट्टारकजी की नसिंया में आयोजित शोक सभा की अध्यक्षता दिगम्बर जैन मंदिर महासंघ के अध्यक्ष ज्ञानचंदजी खिन्दूका तथा टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के मानद् महामंत्री डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल ने की।

इस अवसर पर लोकायुक्त श्री मिलापचन्द जैन, श्री नरेश सेठी, डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल, डॉ. राजेन्द्र के. गोधा, पार्षद शीला ड्योडया आदि ने राज्यपाल के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर प्रकाश डालते हुये राज्यपाल के साथ गुजारे हुये अपने संस्मरण व्यक्त किये। इसके अतिरिक्त शोक सभा में दिगम्बर, श्वेताम्बर, ओसवाल आदि समाजों की विभिन्न सामाजिक, धार्मिक और शिक्षण संस्थाओं के प्रतिनिधियों द्वारा राज्यपाल जैन को श्रद्धासुमन अर्पित किये। सभा का संचालन श्रीमती शशि जैन ने किया।

**पगड़ी बंधन, देवदर्शन एवं शोकांजलि सभा** का आयोजन शनिवार, दिनांक 4 अक्टूबर 03 को सरदार वल्लभभाई पटेल सभागार मढ़ाताल, सिविक सेन्टर, जबलपुर में प्रात: 10 बजे किया गया है। ●

## वैराग्य समाचार

1. श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के स्नातक पण्डित राजेशकुमारजी शास्त्री शाहगढ़ की सासूजी श्रीमती किरण जैन सागर का दिनांक 19 सितम्बर 03 को जयपुर में आकस्मिक देहावसान हो गया है। तथा राजेशजी के ही नानाससुर श्री हरचंदजी जैन (तेंदूडावरवाले) सागर का भी दिनांक 24 सितम्बर को जयपुर में ही देहावसान हो गया है। आप दोनों ही सरल स्वभावी एवं धार्मिक आचरण से युक्त थे। ज्ञातव्य है कि पर्यूषण पर्व के उपरान्त आप सपरिवार सागर से तीर्थ वन्दना करने निकले थे।

2. हैदराबाद निवासी श्री बाबूलालजी पाटोदी का दिनांक 8 सितम्बर 03 को आकस्मिक निधन हो गया है। आप कर्मठ व्यक्तित्त्व के धनी तथा अत्यन्त धार्मिक प्रवृत्ति के थे। आपकी स्मृति में 101/- प्राप्त हुये हैं।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही मुक्ति को प्राप्त हो - यही भावना है।

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) अक्टूबर (प्रथम) 2003
J.P.C. 3779/02/2003-05

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा जयपुर,** डबल एम.ए. (जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्मदर्शन) तथा इतिहास
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

*यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -*
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
**फोन :** (0141) 2705581, 2707458
**तार :** त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127